कहा भयो जो मुखथें

कहा भयो जो मुखथें कहयो, जब लग चोट न निकसी फूट।
प्रेम बान तो ऐसे लगत हैं, अंग होत हैं टूक टूक।।

मुख के सब्द मैं बोहोत सुने,इन भी कोई दिन किया पुकार।
पर घायल भई सो तो कोईक कुली में, सो रहत भवसागर पार।।

वाको आग खाग बाघ नाग न डरावें,गुण अंग इन्द्री से होत रहित।
डर सकल सांमी इनसे डरपत, या विध पाइए प्रेम परतीत।।

लगी वाली और कछु नु देखे, पिंड ब्रह्मांड वाको है री नाहीं।
ओ खेलत प्रेमे पार पियासों, देखन को तन सागर माहीं।।

जिन बांधे हैं भवन चौदे, सो नार हमसे रहत हैं न्यारी।
दुख में बैठी सुख लेवे महामति, पार के पार पिया की प्यारी।।